# वारविचार

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

वार पञ्चाङ्ग का दूसरा अङ्ग है। पञ्चाङ्ग में तिथि के पास वार लिखा होता है। वार का अर्थ सप्ताह के प्रत्येक दिन से है। संस्कृत व्याकरण में वृ धातु से घञ् प्रत्यय के योग से वार शब्द निष्पन्न होता है। भारतीय ज्योतिषशास्त्र में सात वार माने गए हैं जिनका क्रम इस प्रकार है-रविवार, सोमवार, भौमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार तथा शनिवार-

**रविः सोमस्तथा भौमो बुधो गीष्पतिरेव।**

**शुक्रः शनैश्चरश्चैव वाराः सप्तप्रकीर्तिताः।।**

**वारों की उत्पत्ति और उनके क्रम का वैज्ञानिक आधार-**

भारत में प्रचलित वार और उनके नाम और क्रम पूर्णतः ग्रहों की स्थितियों पर आधारित हैं। वारों की उत्पत्ति का इतिहास भी प्राचीन है। भारत में जब राहु और केतु ग्रहों को ज्योतिषशास्त्र में सम्मिलित नहीं किया गया था अथवा इनपर विचार नहीं किया जाता था तभी से या उससे पूर्व से सात वारों की गणनाएं होती थीं। भारतीय ज्योतिष ग्रन्थों में ग्रहों की कक्षाओं की स्थिति इस प्रकार है-

**मन्दामरेज्याभूपुत्र सूर्यशुक्रेन्दुजेन्दवः।**

**परिभ्रमन्त्यधोऽधस्तथा सिद्धा विद्याधराघनाः।।**

अर्थात् पृथिवी से आरम्भ कर पहिले चन्द्रमा, पुनः बुध, उसके पश्चात् शुक्र तत्पश्चात् सूर्य, तदनन्तर मंगल, पुनः गुरु तथा सबसे अन्त में (ऊपर) शनि की कक्षा है। इस क्रम के अनुसार प्रातः सूर्योदय के प्रारम्भ कर एक-एक ग्रह की एक-एक होरा (1 होरा=$2^1/_2$ अर्थात् 1 घण्टे की होती है) मानी जाती है। अहोरात्र के आदि अन्त वर्ण लोप को होरा माना गया है। एक अहोरात्र 24 घण्टे में सात ग्रहों की होराओं के तीन चक्कर होकर 21 होरा व्यतीय होती है। पुनः तीन और ग्रहों की होरा बीतने पर 24

होरा अर्थात् 1 अहोरात्र पूर्ण हो जाता है। पुनः अगले सूर्योदय के समय चौथे ग्रह की होरा आयेगी और वह वार उसी नाम से जाना जायेगा। उदाहरण के लिए आज अगर रविवार है तो वह सूर्य की होरा से आरम्भ है। तीन चक्कर काटने पर 22वीं होरा पुनः सूर्य की होगी 23वीं शुक्र की, 24वीं बुध की होकर अहोरात्र पूर्ण होगा, पुनः अगला सूर्योदय चन्द्र की होरा में होने से सोमवार का दिन होगा। इसी प्रकार मंगल से आरम्भ कर 22वीं होरा मंगल की, पुनः 23वीं सूर्य की तथा 24वीं शुक्र की होकर एक अहोरात्र समाप्त हो जायेगा। पुनः अगले सूर्योदय में बुध की होरा प्रारम्भ होगी। इसी क्रम से सातों वार होते हैं।

आजकल सम्पूर्ण विश्व में वारों के नाम सात ही हैं। इनका क्रम भी पूरे विश्व में समान है, अतः निश्चित है कि इस सिद्धान्त की उत्पत्ति संसार के किसी अन्य देश में नहीं थी। भारतवर्ष में प्राचीन आचार्य बहुत पहिले ही इस वार उत्पत्ति को जानते थे।

**वारों की स्थिरादि संज्ञा-**

रविवार स्थिर है, इसीलिए इसमें स्थिर इत्यादि कर्म करना चाहिए। चन्द्रवार चर है, भौमवार उग्र है, बुधवार सम है, बृहस्पतिवार लघु है, शुक्रवार मृदु है तथा शनिवार तीक्ष्ण है। वारों का उपयोग जन्म तथा प्रश्न में भी होता है। जिसके जन्मलग्न में सूर्य हो वह विलम्ब से कार्य करता है एवं प्रश्नलग्न सूर्य से युक्त अथवा दृष्ट हो तो विलम्ब से कार्यसिद्धि होती है।

**सूक्ष्म वार की अवधारणा-**

मुहूर्त ग्रन्थों में लिखा है कि एक वार में 24 वार होते हैं और वे होरा कहलाते हैं। प्रत्येक वार में प्रथम होरा उसी वार की होती है और उसके बाद ग्रहकक्षा के पिछले प्रथम चक्र वाला क्रम चलता है अर्थात् शनिवार में प्रथम होरा शनि की, दूसरी गुरु की, सातवीं चन्द्रमा की और 24वीं मंगल की होती है। जो कर्म जिस वार में करने का आदेश है उसको उसी की होरा में करना चाहिए।

**वारों के स्वामी या देवता-**

वारों के स्वामी/देवता का उल्लेख आगे किया जा रहा है-

| वार | स्वामी/देवता |
|---|---|

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

| | |
|---|---|
| रविवार | शिव |
| सोमवार | दुर्गा |
| मंगलवार | कार्तिकेय |
| बुधवार | विष्णु |
| गुरुवार | ब्रह्मा |
| शुक्रवार | इन्द्र |
| शनिवार | काल |

**वार का आरम्भ-**

भारतीय ज्योतिषशास्त्र में सूर्योदय से अगले सूर्योदयपर्यन्त काल को वार कहते हैं-"सूर्योदयात् आरभ्य सूर्योदयपर्यन्तं यः कालः सः वारो ज्ञेयः"। इस आधार पर किसी भी वार का आरम्भ सूर्योदय से माना जाना चाहिए। आचार्य वशिष्ठ का अभिमत है-

**सर्वेषामेव मानानां दिनमर्कस्य दर्शनात् ।**

**अथवा**

**अखिलेष्वन्यकार्येषु दिनानि उदयाद्भवेत्।**

**शुभ और क्रूर वार-**

सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार शुभ वार हैं अर्थात् सौम्य प्रकृति के हैं। रविवार, मंगलवार तथा शनिवार क्रूर अर्थात् राजस तथा तामस प्रकृति हैं।

**वार और करणीय कर्म-**

रविवार- भारी उद्योग, राजद्वार के कार्य, नौकरी, उच्चाधिकारियों एवं महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों से मिलना, राज्याभिषेक, यात्रा, गाय, अग्नि, मन्त्रशास्त्र, चर्म, काष्ठ, खनिज सम्बन्धी कार्य, युद्ध शुभ कर्म हैं।

सोमवार- मोती, चाँदी, गन्ना, वन-उपवन, कृषि, जल, भूषण, संगीत, यज्ञ, यात्रा, परिवहन, लघु उद्योग, व्यापार सम्बन्धी कार्य श्रेष्ठ हैं।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

मंगलवार-फूट डालना, चोरी, झूठ बोलना, विष देना, ऋण चुकाना, आग लगाना, शस्त्र बनाना, युद्ध करना आदि साहसिक काम श्रेष्ठ हैं।

बुधवार-धन जमा करना, व्यापार, शिक्षा, साहित्य लेखन, समाचार, कलाकौशल, शिल्प, व्यायाम, विवाद आदि काम श्रेष्ठ हैं।

गुरुवार- धार्मिक, आध्यात्मिक, आर्थिक तथा उत्सवादि मंगल कार्यों को करना श्रेष्ठ है।

शुक्रवार- कृषि, पशुपालन, अभिनय, मनोरञ्जन, वस्त्राभूषण निर्माण, महिलाओं से सम्बन्धित कार्य, व्यापार तथा धार्मिक कार्य श्रेष्ठ हैं।

शनिवार- विष, आसव, निर्माण कार्य, लोहा आदि सम्बन्धी मशीनरी कार्य, पुलनिर्माण, दीक्षा लेना, गृहप्रवेश आदि श्रेष्ठ हैं।

**वर्ष के राजा-मन्त्री आदि वारों पर आधारित-**

वर्ष का प्रथम दिन (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा) जिस वार को पड़ता है, वही ग्रह वर्ष का राजा होता है और मेष की सङ्क्रान्ति जिस ग्रह के वार में पड़ती हैवही मन्त्री मान लिया जाता है।

**वार और निषिद्ध कर्म-**

रविवार को तेल मलना, मंगल को बाल काटना, ऋण लेना और माँस खाना, शुक्रवार को माँस खाना, बुधवार को धन देना और स्त्री संग शुभ नहीं है।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi